लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - २१

महामहोपाध्यायश्रीगोकुलनाथविरचितं

शिवशतकम्

विद्यावतीसुतरमाकान्तप्रणीतया पदार्थप्रकाशिकाख्यव्याख्यया
भाषानुवादेन च सनाथितम्

रमाकान्तपाण्डेयः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - २१

महामहोपाध्यायश्रीगोकुलनाथविरचितं

शिवशतकम्

विद्यावतीसुतरमाकान्तप्रणीतया पदार्थप्रकाशिकाख्यव्याख्यया
भाषानुवादेन च सनाथितम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी

टीकाकारः सम्पादकोऽनुवादकश्च
डॉ.रमाकान्तपाण्डेयः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् , (मानितविश्वविद्यालयः)
जयपुरपरिसरः, त्रिवेणीनगरम्, जयपुरम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नईदिल्ली

भूमिका

महामहोपाध्याय पं. गोकुलनाथ उपाध्याय संस्कृतसाहित्य के उन देदीप्यमान नक्षत्रों में से हैं जिन्होंने संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न प्रस्थानों को पल्लवित और पुष्पित किया। उनकी अनेक शास्त्र और काव्यरचनाएं प्रकाशित हैं।

म.म. गोकुलनाथ के शिवशतक या शिवस्तुति का प्रकाशन निर्णयसागर प्रेस से प्रकाशित काव्यमाला के तृतीय गुच्छक में हुआ था। प्रस्तुत संस्करण का पाठ भी काव्यमाला से प्रकाशित शिवशतक के उक्त संस्करण पर आधारित है। निर्णय सागर से शिवशतक का मूलमात्र प्रकाशित हुआ था। इस शतक पर कोई प्राचीन टीका या अनुवाद मुझे उपलब्ध नहीं हुए। शिवशतक पर पदार्थप्रकाशिका टीका लिखते हुए मिथिला के कतिपय विद्वानों से यह ज्ञात हुआ कि इस पर पं. जीवन झा ने कोई टीका लिखी थी, जिसका प्रकाशन सन् १९०५ में वाराणसी से हुआ था। प्रयत्न करने पर भी वह टीका मुझे प्राप्त नहीं हुई। इस अन्वेषण के क्रम में शिवशतक के एक और संस्करण का पता चला जो कभी पण्डित दामोदर झा के सम्पादन में 'शिवस्तुतिमाला' नाम से प्रकाशित हुआ था। मुझे यह संस्करण भी प्राप्त नहीं हो सका। इसके बारे में इतनी जानकारी और मिली कि इसमें शिवशतक के केवल ५१ श्लोक ही प्रकाशित किये गये थे। अस्तु, मैंने काव्यमाला के तृतीय गुच्छक में प्रकाशित शिवशतक के पाठ को आधार मान कर टीका लिखना प्रारम्भ किया। इस क्रम में मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या पाठनिर्धारण के रूप में आयी। प्रतीत होता है कि शिवशतक का काव्यमाला संस्करण भी किसी अशुद्ध पाण्डुलिपि के आधार पर ही तैयार किया गया था। अनेकत्र अर्थयोजना न हो पाने के कारण मुझे इस संस्करण के पाठ में संशोधन करना पड़ा। निराधार संशोधन से यद्यपि मैं संतुष्ट नहीं था तथापि मैंने टीका और अनुवाद का कार्य पूर्ण करके इसे पुरोवाक् की प्रत्याशा में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के पास भेज दिया।

जानातीति हेतोः नेति नेतीति कृत्वा निषेधति। तथा च बृहदारण्यके- अथात आदेशो नेति नेति (४.४.२२)। उपनिषत्सु बहुत्र निषेधमुखेन ब्रह्म प्रतिपादितम्- यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह। तथा च केनोपनिषदि- तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते। प्रसङ्गेऽस्मिन् नैके मन्त्राः निषेधमुखेन ब्रह्मस्वरूपं प्रतिपादयन्ति। हे व्यवहित! व्यवधानविशिष्ट! तस्मात् कारणात् तव स्वरूपव्यवहितत्वात् निकटस्थिते समीपस्थिते अपि मिलिते प्राप्ते अपि त्वयि शिवे, अतिथेः मम भोगः आस्वादः क्व? न क्वापीत्यर्थः। अतिथेरागमनस्य तिथिः कालो वा न भवति। अहमागत्य तव सविधे उषित्वा त्वयि मिलित्वा चापि तव स्वरूपं ज्ञातुं न पारयिष्यामि। यतो हि तव स्वरूपं व्यवधानयुक्तं वर्ततेऽथ च श्रुतिरूपा ते पुत्री अपि तन्न जानातीति। अतो ममातिथेर्भोगोऽसम्भवी। पुनः संसारे ममागमनं ध्रुवमित्यभिप्रायः।

अनुवाद - हे श्रुतिजनक! यह तुम्हारी श्रुति रूपी पुत्री बाहर आकर 'नेति नेति' रट रही है। इसलिए हे व्यवधानयुक्त शिव! तुम्हारे पास होने या तुम में मिल जाने पर भी (तुम्हारे व्यवधानयुक्त होने के कारण) मुझ अतिथि का भोग कहाँ?।

(२४)

अपरिमितविभागभूमिरेक-
स्त्वमसि ततो जगदण्डबिन्दुरासीत्।
इति भुवनभरैकधुर्य! जाने
दश ककुभो गणितक्रमेण सिद्धाः।।

अन्वयः - हे भुवनभरैकधुर्य! एकः त्वम् अपरिमितविभागभूमिः असि। ततः जगदण्डबिन्दुः आसीत् इति गणितक्रमेण सिद्धाः दश ककुभः (सन्तीति) जाने।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली